अत्यतं गोपनीय - केवल आतंरिक एवं सीमित प्रयोग हेतु

सीनियर स्कूल सर्टिफिकेट परीक्षा - **2020**

अंक-योजना HISTORY

SUBJECT CODE : 027   PAPER CODE : 61/2/3

सामान्य निर्देश :-

1. आप जानते हैं कि परीक्षार्थियों के सही और उचित आकलन के लिए उत्तर पुस्तिकाओं का मूल्यांकन एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। मूल्यांकन में एक छोटी-सी भूल भी गंभीर समस्या को जन्म दे सकती है जो परीक्षार्थियों के भविष्य, शिक्षा प्रणाली और अध्यापन-व्यवस्था को भी प्रभावित कर सकती है। इससे बचने के लिए अनुरोध किया जाता है कि मूल्यांकन प्रारंभ करने से पूर्व ही आप मूल्यांकन निर्देशों को **पढ़ और समझ** लें। **मूल्यांकन हम सबके लिए 10-12 दिन का मिशन है अतः यह आवश्यक है कि आप इसमें अपना महत्वपूर्ण योगदान दें।**

2. मूल्यांकन अंक-योजना में दिए गए निर्देशों के अनुसार ही किया जाना चाहिए, अपनी व्यक्तिगत व्याख्या या किसी अन्य धारणा के अनुसार नहीं। यह अनिवार्य है कि अंक-योजना का अनुपालन पूरी तरह और निष्ठापूर्वक किया जाए। **हालाँकि, मूल्यांकन करते समय नवीनतम सूचना और ज्ञान पर आधारित अथवा नवाचार पर आधारित उत्तरों को उनकी सत्यता और उपयुक्तता को परखते हुए पूरे अंक दिए जाएँ।**

3. मुख्य परीक्षक प्रत्येक मूल्यांकन कर्ता के द्वारा पहले दिन जाँची गई पाँच उत्तर पुस्तिकाओं के मूल्यांकन की जाँच ध्यानपूर्वक करें और आश्वस्त हों कि मूल्यांकन-योजना में दिए गए निर्देशों के अनुसार ही मूल्यांकन किया जा रहा है। परीक्षकों को बाकी उत्तर पुस्तिकाएँ तभी दी जाएँ जब वह आश्वस्त हो कि उनके अंकन में कोई भिन्नता नहीं है।

4. परीक्षक सही उत्तर पर सही का निशान (√) लगाएँ और गलत उत्तर पर गलत का (**×**)। मूल्यांकन-कर्ता द्वारा ऐसा चिह्न न लगाने से ऐसा समझ में आता है कि उत्तर सही है परंतु उस पर अंक नहीं दिए गए। परीक्षकों द्वारा यह भूल सर्वाधिक की जाती है।

5. यदि किसी प्रश्न का उपभाग हों तो कृपया प्रश्नों के उपभागों के उत्तरों पर **दायीं ओर** अंक दिए जाएँ। बाद में इन उपभागों के अंकों का योग **बायीं ओर** के हाशिये में लिखकर उसे गोलाकृत कर दिया जाए। **इसका अनुपालन दृढ़तापूर्वक किया जाए।**

6. यदि किसी प्रश्न के कोई उपभाग न हो तो बायीं ओर के हाशिये में अंक दिए जाएँ और उन्हें गोलाकृत किया जाए। इसके अनुपालन में भी दृढ़ता बरती जाए।

7. यदि परीक्षार्थी ने किसी प्रश्न का उत्तर दो स्थानों पर लिख दिया है और किसी को काटा नहीं है तो जिस उत्तर पर अधिक अंक प्राप्त हो रहे हों, उस पर अंक दें और दूसरे को काट दें। यदि परीक्षार्थी ने अतिरिक्त प्रश्न/प्रश्नों का उत्तर दे दिया है तो जिन उत्तरों पर अधिक अंक प्राप्त हो रहे हों उन्हें ही स्वीकार करें/ उन्हीं पर अंक दें।

8. एक ही प्रकार की अशुद्धि बार-बार हो तो उसे अनदेखा करें और उस पर अंक न काटे जाएँ।

9. यहाँ यह ध्यान रखना होगा कि मूल्यांकन में संपूर्ण अंक पैमाने 0 – 80 का प्रयोग अभीष्ट है अर्थात परीक्षार्थी ने यदि सभी अपेक्षित उत्तर-बिंदुओं का उल्लेख किया है तो उसे पूरे अंक देने में संकोच न करें।

10. प्रत्येक परीक्षक को पूर्ण कार्य-अवधि में अर्थात 8 घंटे प्रतिदिन अनिवार्य रूप से मूल्यांकन कार्य करना है और प्रतिदिन मुख्य विषयों की बीस उत्तर-पुस्तिकाएँ तथा अन्य विषयों की 25 उत्तर पुस्तिकाएँ जाँचनी हैं। (विस्तृत विवरण 'स्पॉट गाइडलाइन' में दिया गया है)

11. यह सुनिश्चित करें कि आप निम्नलिखित प्रकार की त्रुटियाँ न करें जो पिछले वर्षों में की जाती रही हैं –

- उत्तर पुस्तिका में किसी उत्तर या उत्तर के अंश को जाँचे बिना छोड़ देना।
- उत्तर के लिए निर्धारित अंकों से अधिक अंक देना।
- उत्तर या दिए गए अंकों का योग ठीक न होना।
- उत्तर पुस्तिका के अंदर दिए गए अंकों का आवरण पृष्ठ पर सही अंतरण न होना।
- आवरण पृष्ठ पर प्रश्नानुसार योग करने में अशुद्धि।
- योग करने में अंकों और शब्द में अंतर होना।
- उत्तर पुस्तिकाओं से ऑनलाइन अंकसूची में सही अंतरण न होना।
- कुल अंकों के योग में अशुद्धि
- उत्तरों पर सही का चिह्न (√) लगाना किंतु अंक न देना। सुनिश्चित करें कि (√) या **(×)** का उपयुक्त निशान ठीक ढंग से और स्पष्ट रूप से लगा हो। यह मात्र एक रेखा के रूप में न हो)
- उत्तर का एक भाग सही और दूसरा गलत हो किंतु अंक न दिए गए हों।

12. उत्तर पुस्तिकाओं का मूल्यांकन करते हुए यदि कोई उत्तर पूर्ण रूप से गलत हो तो उस पर (x) निशान लगाएँ और शून्य (0) अंक दें।

13. उत्तर पुस्तिका में किसी प्रश्न का बिना जाँचे हुए छूट जाना या योग में किसी भूल का पता लगना, मूल्यांकन कार्य में लगे सभी लोगों की छवि को और बोर्ड की प्रतिष्ठा को धूमिल करता है।

14. सभी परीक्षक वास्तविक मूल्यांकन कार्य से पहले 'स्पॉट इवैल्यूएशन' के निर्देशों से सुपरिचित हो जाएँ।

15. प्रत्येक परीक्षक सुनिश्चित करे कि सभी उत्तरों का मूल्यांकन हुआ है, आवरण पृष्ठ पर तथा योग में कोई अशुद्धि नहीं रह गई है तथा कुल योग को शब्दों और अंकों में लिखा गया है।

16. केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड पुन: मूल्यांकन प्रक्रिया के अंतर्गत परीक्षार्थियों के अनुरोध पर निर्धारित शुल्क भुगतान के बाद उन्हें उत्तर पुस्तिकाओं की फोटो कॉपी प्राप्त करने की अनुमति देता है।

MARKING SCHEME HISTORY-027
CLASS XII A I S S C E-March 2020
CODE NO. 61/2/3

प्र.स.	अपेक्षित उत्तर/मूल्य बिंदु	पृष्ठ स.	अंक
1.	C (निषाद)	पृ.स -61	1
2.	मथुरा से प्राप्त बुद्ध की मूर्ति **दृष्टिबधितों के लिए:** शालभंजिका	पृ.स -103 पृ.स -101	1
3.	C (I और III)	पृ.स -11	1
4.	फ्रांस के संग्रहालय में प्रदर्शित करने के लिए **अथवा** स्तूपों में बुद्ध से जुड़े अवशेष गाड़ दिये जाते थे जिन्हे पवित्र समझा जाता है।	पृ.स -83 पृ.स -96	1
5.	बोधिसत्तो को परम करुणामय जीव माना गया जो अपने सत्कार्यों से पुण्य कमाते थे। लेकिन वे इस पुण्य का प्रयोग दुनिया को दुखों में छोड़ देने के लिए और निब्बान प्राप्ति के लिए नहीं करते थे।बल्कि वे इससे दूसरों की सहायता करते थे।	पृ.स -103	1
6.	**वैष्णववाद** वह हिंदू परंपरा है जिसमें विष्णु को सबसे महत्वपूर्ण देवता मानकर उनकी पूजा की जाती है और **शैववाद** वह संकल्पना है जिसमें शिव को सबसे महत्वपूर्ण देवता माना जाता है।	पृ.स -104	1
7.	शहरी केंद्रों / कोई शहरी विशेषता	पृ.स -5	1
8.	वह सम्राट शाहजहाँ के ज्येष्ठ पुत्र दारा शिकोह का चिकित्सक था।	पृ.स -122	1
9.	C (हरिहर और बुक्का)	पृ.स -171	1
10.	B(I,II और III)	पृ.स -173	1
11.	D (कंधार को लेकर उसके सफाविदों के साथ सौहाद्रपूर्ण संबंध थे)	पृ.स -230	1

12.	दिल्ली	पृ.स -221	1
13.	गुलबदन बेगम **अथवा** अब्दुल हमीद लाहौरी	पृ.स -243 पृ.स -231	1
14.	किताब-उल-हिन्द	पृ.स -117	1
15.	इब्न बतूता	पृ.स -118	1
16.	C [(A) और (R) दोनों सही हैं और(R),(A) की सही व्याख्या है।]	पृ.स -365	1
17.	सर सिडनी रॉलेट की अध्यक्षता वाली एक समिति की संस्तुतियों के आधार पर अंग्रेज़ों ने प्रेस पर प्रतिबंध लगा दिया था और बिना जांच के कारावास की अनुमति दे दी थी।	पृ.स -349	1
18.	अवध में नवाब वाजिद अली शाह जैसे लोकप्रिय शासक को गद्दी से हटा दिए जाने के बाद लोगों ने नवाब के युवा बेटे बिरजिस क़द्र को अपना नेता घोषित कर विद्रोह की बागडोर सौपी।	पृ.स -292	1
19.	B(III,I,IV,II)	पृ.स -361,364,391,411	1
20.	D (अंग्रेज़ों की अनुमति के बिना सहयोगी पक्ष किन्हीं अन्य शासकों के साथ संधि कर सकेगा)	पृ.स -296	1
	<u>खंड ख</u>		
21.	**<u>हड़प्पा के शहरों की गृह स्थापत्य कला:</u>** i निचला शहर आवासीय भवनों के उदाहरण प्रस्तुत करता है। ii. इनमें से कई भवन एक आँगन पर केंद्रित थे जिसके चारों ओर कमरे बने थे। iii. संभवत: आँगन, खाना पकाने और कताई करने जैसी गतिविधियों का केंद्र था। iv. भूमि तल पर बनी दीवारों में खिड़कियाँ नहीं हैं। v. मुख्य द्वार से आंतरिक भाग अथवा आँगन का सीधा अवलोकन नहीं होता है। vi. हर घर का अपना एक स्नानघर होता था। vii. हर घर की नालियाँ सड़क की नालियों से जुड़ी हुई थीं।	पृ.स -7	3

	viii. कुछ घरों में दूसरे तल या छत पर जाने हेतु बनाई गई सीढ़ियों के अवशेष मिले थे। ix. कई आवासों में कुएं थे। x. कोई अन्य मान्य बिंदु किन्ही तीन बिंदुओं की व्याख्या		
22.	**<u>विजयनगर शहर के लिए जल के स्रोत:</u>** i. तुंगभद्रा नदी इस क्षेत्र में जल का मुख्य स्रोत था। ii. आस-पास का भूदृश्य रमणीय ग्रेनाइट की पहाड़ियों से परिपूर्ण है जो शहर के चारों ओर करधनी का निर्माण करती सी प्रतीत होती हैं। iii. इन पहाड़ियों से कई जल-धाराएँ आकर नदी से मिलती हैं। iv. लगभग सभी धाराओं के साथ-साथ बाँध बनाकर अलग-अलग आकारों के हौज़ बनाए गए थे। v. पानी के संचयन के लिए कुछ हौज़ बनाए गये थे। vi. कमलपुरम् जलाशय के पानी से न केवल आस-पास के खेतों को सींचा जाता था बल्कि इसे एक नहर के माध्यम से राजकीय केंद्र तक भी ले जाया गया था। vii. सबसे महत्वपूर्ण जल संबंधी संरचनाओं में से एक, हिरिया नहर के जल का प्रयोग सिंचाई और पीने के लिए किया जाता था। किन्ही तीन बिंदुओं की व्याख्या	पृ.स -177	3
23.	**<u>"स्वराज्य के लिए हिंदू,मुसलमान,पारसी और सिक्ख, सबको एकजुट होना पड़ेगा"</u>** **<u>असहयोग आंदोलन:</u>** i गांधीजी ने खिलाफ़त आंदोलन के साथ हाथ मिला लिए। ii हिंदू और मुसलमान मिलकर औपनिवेशिक शासन का अंत कर देंगे। iii आम लोगों ने चाहे हिंदू,मुसलमान,पारसी या सिक्ख हो सबने आंदोलन में भाग लिया।	पृ.स -350	3

	iv औपनिवेशिक शासन के खिलाफ़ असहयोग की अपील पर किसानों,कामगारों और दूसरों ने औपनिवेशिक कानूनों की अवहेलना कर दी। v कोई अन्य मान्य बिंदु किन्ही तीन बिंदुओं की व्याख्या		
24.	**<u>वे परिस्थितियाँ जिनके अंतर्गत अंग्रेज़ अधिकारियों ने उन्नीसवीं शताब्दी में संथालों को राजमहल की पहाड़ियों में बसने के लिए आमंत्रित किया</u>:** i जब ब्रिटिश लोग पहाड़ियों को अपने बस में करने में असफल रहे तो उनका ध्यान संथालों की ओर गया। ii संथाल आदर्श बाशिंदे प्रतीत हुए, क्योंकि उन्हें जंगलों का सफ़ाया करने में कोई हिचक नहीं थी और वे भूमि को पूरी ताक़त लगाकर जोतते थे। iii संथालों को ज़मीनें देकर राजमहल की तलहटी में बसने के लिए तैयार कर लिया गया। iv संथालों ने हल चलाकर खेती की और स्थायी किसान बन गये । V कोई अन्य मान्य बिन्दु किन्ही तीन बिंदुओ की व्याख्या **अथवा** **<u>अठारहवी शताब्दी के अंत के दशकों में राजमहल की पहाड़ियों के पहाड़ी लोगों की आर्थिक और सामाजिक दशा</u> :** i शिकारियों, झूम खेती करने वालों, खाद्य बटोरने वालों, काठकोयला बनाने वालों, रेशम के कीड़े पालने वालों के रूप में पहाड़िया लोगों की ज़िंदगी जंगल स घनिष्ठ रूप से जुड़ी हुई थी। ii वे इमली के पेड़ों के बीच बनी अपनो झोपड़ियों में रहते थे और आम के पेड़ों की छाव में आराम करते थे। iii उनके मुखिया लोग अपने समूह में एकता बनाए रखते थे, आपसी लड़ाई-झगड़े निपटा देते थे। iv पहाड़िया लोग बराबर उन मैदानों पर आक्रमण करते रहते थे जहाँ किसान एक स्थान पर बस कर अपनी खेती-बाड़ी किया करते थे। v पहाड़िया लोग अपने खाने के लिए तरह-तरह की दालें और ज्वार-बाजरा उगा लेते थे। vi पहाड़िया लोग खाने के लिए *महुआ* के फूल इकट्ठे करते थे, बेचने के लिए रेशम के कोया और राल और काठकोयला बनाने के लिए लकड़ियाँ इकट्ठी करते थे।	पृ.स -270-271 पृ.स -267-269	3 3

	vii वे पूरे प्रदेश को अपनी निजी भूमि मानते थे। viii वे बाहरी लोगों के प्रवेश का प्रतिरोध करते थे। ix व्यापारी लोग भी इन पहाड़ियों द्वारा नियंत्रित रास्तों का इस्तेमाल करने की अनुमति प्राप्त करने हेतु उन्हें कुछ पथकर दिया करते थे। x कोई अन्य मान्य बिंदु किन्ही तीन बिंदुओं की व्याख्या		
	खंड ग		
25.	**<u>महाजनपदों की विशेषताएँ:</u>** i. अधिकांश महाजनपदों पर राजा का शासन होता था। ii. *गण* और संघ के नाम से प्रसिद्ध राज्यों में कई लोगों का समूह शासन करता था,इस समूह का प्रत्येक व्यक्ति राजा कहलाता था। iii. भगवान महावीर और भगवान बुद्ध इन्हीं *गणों* से संबंधित थे। iv. प्रत्येक महाजनपद की एक राजधानी होती थी जिसे प्राय: किले से घेरा जाता था। v. ब्राह्मणों ने धर्मशास्त्र नामक ग्रंथों में शासकों के लिए नियम निर्धारित किए। vi. शासकों का काम किसानों, व्यापारियों और शिल्पकारों से कर तथा भेंट वसूलना माना जाता था। vii. धीरे-धीरे कुछ राज्यों ने अपनी स्थायी सेनाएँ और नौकरशाही तंत्र तैयार कर लिए। viii. बाक़ी राज्य अब भी सहायक-सेना पर निर्भर थे जिन्हें प्राय: कृषक वर्ग से नियुक्त किया जाता था। ix. कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु किन्ही चार बिंदुओ की व्याख्या **<u>सबसे शक्तिशाली जनपद के रूप में मगध:</u>** i. मगध क्षेत्र में खेती की उपज खास तौर पर अच्छी होती थी। ii. लोहे की खदानें आसानी से उपलब्ध थीं जिससे उपकरण और हथियार बनाना सरल होता था। iii. जंगली क्षेत्रों में हाथी उपलब्ध थे जो सेना के एक महत्वपूर्ण अंग थे। iv. गंगा और इसकी उपनदियों से आवागमन सस्ता व सुलभ	पृ.स -29-31	4+4=8

	होता था। v. बिंबिसार, अजातसतु और महापद्मनंद जैसे महत्वाकांक्षी और शक्तिशाली शासक और उनकी नीतियाँ । vi. राजगाह ('राजाओं का घर')मगध की राजधानी थी जो पहाड़ियों के बीच बसा एक किलेबंद शहर था। बाद में पाटलिपुत्र को राजधानी बनाया गया, जिसकी गंगा के रास्ते आवागमन के मार्ग पर अवस्थिति थी। **किन्ही चार बिंदुओ की व्याख्या** **अथवा** **<u>मौर्य प्रशासन की मुख्य विशेषताएँ :</u>** i. मौर्य साम्राज्य के पाँच प्रमुख राजनीतिक केंद्र थे। वे थे पाटलिपुत्र,तक्षशिला,उज्जयिनी, तोसलि और सुवर्णगिरि। ii. सबसे प्रबल प्रशासनिक नियंत्रण साम्राज्य की राजधानी तथा उसके आसपास के प्रांतीय केंद्रों पर था। iii. भूमि और नदियों दोनों मार्गों से आवागमन बना रहना अत्यंत आवश्यक था। iv. यात्रियों के लिए सेना सुरक्षा का एक प्रमुख माध्यम रही होगी। v. मेगस्थनीज़ ने सनिक गतिविधियों के संचालन के लिए एक समिति और छः उपसमितियों का उल्लेख किया है। vi. असोक ने अपने साम्राज्य को अखंड बनाए रखने के लिए *धम्म* का प्रचार भी किया। **किन्ही पाँच बिंदुओ की व्याख्या** **<u>अशोक के 'धम्म' के सिद्धांत :</u>** i. असोक के *धम्म* के सिद्धांत बहुत ही साधारण और सार्वभौमिक थे ii. असोक के अनुसार *धम्म* के माध्यम से लोगों का जीवन इस संसार में और इसके बाद के संसार में अच्छा रहेगा। iii. असोक ने अपने अधिकारियों और प्रजा के लिए संदेश पत्थरों और	पृ.स -32-34	5+3=8

	स्तंभों पर लिखवाए। iv. इनमें बड़ों के प्रति आदर, संन्यासियों और ब्राह्मणों के प्रति उदारता, शामिल है। v. सेवकों और दासों के साथ उदार व्यवहार। vi. दूसरे के धर्मों और परंपराओं का आदर। vii. *धम्म* के प्रचार के लिए *धम्म महामात्त* नाम से विशेष अधिकारियों की नियुक्ति की गई। किन्ही तीन बिंदुओ की व्याख्या		
26	<u>**मुगलकालीन भारत में कृषि समाज में महिलाओं की भूमिका:**</u> i. महिलाएँ और मर्द कंधे से कंधा मिलाकर खेतों में काम करते थे। ii. मर्द खेत जोतते थे व हल चलाते थे और महिलाएँ बुआई, निराई और कटाई के साथ-साथ पकी हुई फ़सल का दाना निकालने का काम करती थीं। iii. उत्पादन के कई पहलू महिलाओं के श्रम पर निर्भर थे। iv. इस संदर्भ में घर(महिलाएँ) और दुनिया(मर्द)के बीच एक लैंगिक अलगाव संभव नहीं था। v. पश्चिमी भारत में, राजस्वला महिलाओं को हल या कुम्हार का चाक छूने की इजाज़त नहीं थी; इसी तरह बंगाल में अपने मासिक-धर्म के समय महिलाएँ पान के बगान में नहीं घुस सकती थीं। vi. किसान और दस्तकार महिलाएँ ज़रूरत पड़ने पर न सिर्फ़ खेतों में काम करती थीं बल्कि नियोक्ताओं के घरों पर भी जाती थीं और बाज़ारों में भी। vii. बच्चे पैदा करने की अपनी क़ाबिलियत की वजह से महिलाओं को महत्वपूर्ण संसाधन के रूप में देखा जाता था। viii. बड़े होने पर यह बच्चे श्रम आधारित समाज का हिस्सा हो जाते थे। ix. शादी-शुदा महिलाओं की कमी थी क्योंकि कुपोषण, बार-बार माँ बनने और प्रसव के वक़्त मौत की वजह से महिलाओं में मृत्युदर बहुत ज़्यादा थी। x. महिलाएँ घर के काम भी संभालती थी। xi. घर का मुखिया मर्द होता था,महिलाएँ माँ,पत्नी और बहन की भूमिका निभाती थी।	पृ.स -206-207	8

	xii. महिलाओं को पुश्तैनी संपनि का हक़ मिला हुआ था। समग्रता में मूल्यांकन अथवा **<u>मुगल सामाज्य की भू-राजस्व प्रणाली:</u>** i. ज़मीन से मिलने वाला राजस्व मुग़ल साम्राज्य की आर्थिक बुनियाद थी। ii. प्रशासनिक तंत्र बनाने के लिए राजस्व महत्वपूर्ण था। iii. दीवान पूरे राज्य की वित्तीय व्यवस्था की देख-रेख करता था। iv. लोगों पर कर का बोझ निर्धारित करने से पहले मुग़ल राज्य ने ज़मीन और उस पर होने वाले उत्पादन के बारे में खास किस्म की सूचनाएँ इकट्ठा करने की कोशिश की। v. भू-राजस्व के इंतज़ामात में दो चरण थे:पहला, कर निर्धारण और दूसरा, वास्तविक वसूली। vi. *जमा* निर्धारित रक़म थी और *हासिल* सचमुच वसूली गई रक़म। vii. अमील-गुज़ार राजस्व वसूली करता था। viii. अकबर ने यह हुक्म दिया कि खेतिहर नक़द भुगतान करे, वहीं फ़सलों में भुगतान का विकल्प भी खुला रहे। ix. राजस्व निर्धारण के लिए ज़मीन की नपाई की गई। x. भूमि का वर्गीकरण पोलज,परौती,चचर और बंजर में। xi. भू-राजस्व संग्रह के प्रकार-कणकुत, बटाई या भाओली,खेत बटाई और लाँग-बटाई। xii. राजस्व का वार्षिक रिकॉर्ड रखा जाता था। xiii. हर प्रांत में जुती हुई ज़मीन और जोतने लायक ज़मीन दोनों की नपाई की गई। xiv. उपमहाद्वीप के कई बड़े हिस्से जंगलों से घिरे हुए थे और इनकी नपाई नहीं हुई। xv. कोई अन्य मान्य बिंदु समग्रता में मूल्यांकन	पृ.स -213	8
27.	**<u>18वीं और 19वीं सदियों के दौरान औपनिवेशिक शहरों में लोगों के सामाजिक जीवन में आए परिवर्तन:</u>** i साधारण भारतीय आबादी के लिए नए शहर दाँतों तले उँगली दबा लेने का अनुभव थे जहाँ ज़िंदगी हमेशा दौड़ती-भागती सी दिखाई देती थी। ii वहाँ चरम संपन्नता और गहन ग़रीबी, दोनों के दर्शन एक साथ होते थे। iii नए यातायात के साधन जैसे बसें और ट्राम।	पृ.स -329-330	8

<table>
<tr><td></td><td>iv घर से दफ़्तर या फैक्ट्री जाना एक नए क़िस्म का अनुभव बन गया।
v टाउन हॉल, सार्वजनिक पार्क, रंगशालाओं और सिनेमा हॉलों जैसे सार्वजनिक स्थानों के बनने से शहरों में लोगों को मिलने-जुलने की उत्तेजक नयी जगह और अवसर मिलने लगे थे।
vi शहरों मं नए सामाजिक समूह बने।
vii लोगों की पुरानी पहचानें महत्वपूर्ण नहीं रहीं।
viii तमाम वर्गों के लोग बड़े शहरों में आने लगे।
ix क्लर्क, शिक्षकों, वकीलों, डॉक्टरों, इंजीनियरों,अकाउंटेंट्स की माँग बढती जा रही थी। नतीजा, मध्यम वर्ग बढ़ता गया।
x बहस और चर्चा का एक नया सार्वजनिक दायरा पैदा हुआ।
xi सामाजिक रीति-रिवाज, क़ायदे-कानून और तौर-तरीकों पर सवाल उठने लगे।
xii शहरों में औरतों के लिए नए अवसर थे।
xiii पत्र-पत्रिकाओं, आत्मकथाओं और पुस्तकों के माध्यम से मध्यवर्गीय औरतें ख़ुद को अभिव्यक्त करने का प्रयास कर रही थीं।
xiv समय बीतने के साथ सार्वजनिक स्थानों पर महिलाओं की उपस्थिति बढ़ने लगी।
xv शहरों में मेहनतकश ग़रीबों या कामगारों का एक नया वर्ग उभर रहा था।
xvi शहर में जीने की लागत पर अंकुश रखने के लिए ज़्यादातर पुरुष प्रवासी अपना परिवार गाँव में छोड़कर आते थे।
xvii शहर की ज़िंदगी एक संघर्ष थी:नौकरी पक्की नहीं थी, खाना महँगा था, रिहाइश का ख़र्चा उठाना मुश्किल था।
xviii ग़रीबों ने शहर में अपनी एक अलग जीवंत शहरी संस्कृति रच ली थी।
xix वे धार्मिक त्योहारों, तमाशों और स्वांग आदि में उत्साहपूर्वक हिस्सा लेते थे जिनमें ज़्यादातर उनके भारतीय और यूरोपीय स्वामियों का मज़ाक उड़ाया जाता था।
xx कोई अन्य मान्य बिंदु
समग्रता में मूल्यांकन

अथवा

<u>जनगणना की प्रक्रिया:</u>
i 1881 से दशकीय जनगणना एक नियमित व्यवस्था बन गई।
ii भारत में शहरीकरण का अध्ययन करने के लिए जनगणना से निकले आँकड़े एक बहुमूल्य स्रोत हैं।
iii जनगणना एक ऐसा साधन थी जिसके ज़रिए आबादी के बारे में सामाजिक जानकारियों को सुगम्य आंकडों में तब्दील किया जाता था।
iv जनगणना आयुक्तों ने आबादी के विभिन्न तबकों का वर्गीकरण करने के लिए</td><td>पृ.स -321-322</td><td>4+4</td></tr>
</table>

	अलग-अलग श्रेणियाँ बना दी थीं। v कई बार यह वर्गीकरण निहायत अतार्किक होता था vi कोई अन्य मान्य बिंदु किन्ही चार बिंदुओं की व्याख्या **<u>औपनिवेशिक शासन के दौरान जनगणना के प्रति संशय:</u>** i जनगणना आयुक्तों ने आबादी के विभिन्न तबकों का वर्गीकरण करने के लिए अलग-अलग श्रेणियाँ बना दी थीं। कई बार यह वर्गीकरण निहायत अतार्किक होता था और लोगों की परिवर्तनशील व परस्पर काटती पहचानों को पूरी तरह नहों पकड़ पाता था। ii बहुधा लोग खुद भी इस प्रक्रिया में मदद देने से इनकार कर देते थे या जनगणना आयुक्तों को गलत जवाब दे देते थे। iii लोगों को लगता था कि सरकार नए टैक्स लागू करने के लिए जाँच करवा रही है। iv ऊँची जाति के लोग अपने घर की औरतों के बारे में जानकारी देने से हिचकिचाते थे। v बहुत सारे लोग ऐसी पहचानों का दावा करते थे जो ऊँची हैसियत की मानी जाती थीं। vi मृत्यु दर और बीमारियों से संबंधित आंकड़ों को इकट्ठा करना भी लगभग असंभव था। किन्ही चार बिंदुओं की व्याख्या		
	खंड घ		
28.	**“एक गोली भी नहीं चलाई गयी”** 28.1 **प्रशासनिक व्यवस्था के समाप्त हो जाने के कारणों की परख कीजिये**? i. बंटवारे की प्रक्रिया चल रही थी। ii किसी को मालूम नहीं था कि सत्ता किसके हाथ में है। iii शासन तंत्र पूरी तरह नष्ट हो चुका था। कोई दो बिंदु 28.2 **हालत को नियंत्रित करने के लिए अंग्रेज़ अधिकारी कोई कदम क्यों नहीं उठा सके**?	पृ.स -392 पृ.स -392	2 2

	i. अंग्रेज़ अफ़सरों को सूझ नहीं रहा था कि हालात को कैसे संभाला जाए। ii. किसी को मालूम नहीं था कि सत्ता किसके हाथ में है। iii. अंग्रेज़ भारत छोड़ने की तैयारी में लगे थे। कोई दो बिंदु 28.3 **क्या आप यह सोचते है कि ज़िला मजिस्ट्रेट की भूमिका न्यायसंगत थी**? उत्तर हाँ या नहीं हो सकता है। (विद्यार्थी के स्वयं के विचार)	पृ.स -392	2
29.	**<u>"उचित" सामाजिक कर्तव्य</u>** **29.1 द्रोण ने एकलव्य को अपना शिष्य स्वीकार करने से क्यों मना कर दिया**? i.द्रोण धर्म समझते थे और केवल कुरु राजकुमारों को शिक्षा देते थे। ii. एकलव्य वनवासी निषाद था। iii.द्रोण ब्राह्मण थे और कुरु राजकुमारों को धनुर्विद्या की शिक्षा देते थे। कोई दो बिंदु 29.2 **एकलव्य ने तीर चलाने की उत्तम कुशलता कैसे प्राप्त की**? i. द्रोण के मना करने पर एकलव्य वन में लौट आया। ii. उसने मिट्टी से द्रोण की प्रतिमा बनाई और उसके सामने तीर चलाने का अभ्यास करने लगा। iii.वह तीर चलाने में सिद्धहस्त हो गया। कोई दो बिंदु **29.3 एकलव्य ने अपने-आप को पांडवों के समक्ष द्रोण का शिष्य होने का**	पृ.स -62 पृ.स -62	2 2

	परिचय क्यों दिया? i. जब कुरु राजकुमारों का कुत्ता उसे देखकर भौंकने लगा तो वह क्रोधित हो गया। ii. उसने सात तीर चलाकर उसका मुँहबंद कर दिया। iii. पांडव तीरंदाज़ी का यह अदभुत दृश्य देखकर आश्चर्यचकित रह गये और एकलव्य को तलाशा। iv. उसने स्वयं को द्रोण का शिष्य बताया। कोई दो बिंदु	पृ.स -62	2
30.	मुगल शहज़ादी जहाँआरा की तीर्थयात्रा 1643 30.1 **जहाँआरा ने शेख के प्रति अपने विश्वास और भक्ति को किस प्रकार दर्शाया**? i. उसने दो बार की अख्तियारी नमाज़ अदा की। ii बहुत दिनों तक वह रात को बाघ के चमड़े पर नहीं सोयी। iii उसने अपने पैर मुकद्दस दरगाह की तरफ नहीं फैलाए। iv उसने अपनी पीठ उनकी तरफ नहीं की। v. वह पेड़ के नीचे दिन गुजारती थी। कोई दो बिन्दु 30.2 **उसने दरगाह को एक विशिष्ट तीर्थ और श्रद्धा का स्थल क्यों माना**? i. ईश्वर के प्रति उसके श्रद्धा और समर्पण की वजह से। ii. वह अपने मुर्शीद(गुरु) की मुरीद थी। iii. यह पारिवारिक परंपरा थी।	पृ.स -157 पृ.स -157	2 2

	iv. आशीर्वाद के लिए। v. कोई अन्य मान्य बिंदु। कोई दो बिंदु 30.3 **उसने किस प्रकार दरगाह पर अपना सम्मान प्रकट किया**? i अपने जर्द चेहरे को उसकी चौखट की धूल से रगड़ा। ii वह नंगे पाव वहाँ की ज़मीन को चूमती हुई गयी। iii उसने मज़ार के चारों ओर फेरे लिए। iv उसने सबसे उम्दा इतर मुकद्दस दरगाह पर छिड़का। v गुलाबी दुपट्टा जो उसके सिर पर था उसे उतारकर मुकद्दस मज़ार के ऊपर रखा। कोई दो बिंदु	पृ.स -157	2
	खंड ड.		
31	<u>भरा हुआ संलग्न मानचित्र देखें</u> **<u>केवल दृष्टिबाधित परीक्षार्थियों के लिए</u>** : 31.1 **विकसित हड़प्पाई पुरास्थल (कोई तीन):** हड़प्पा,मोहनजोदड़ो, लोथल,नागेश्वर,कालीबंगन,राखीगढ़ी,बनावली, धौलावीरा, चन्हुदडो, बालाकोट **अथवा** 1857 **के विद्रोह के केंद्र** (**कोई तीन**): कानपुर,झाँसी,मेरठ,दिल्ली,आज़मगढ़,लखनऊ,कलकत्ता,बनारस,ग्वालियर,जबलपुर,		3+3=6 1x3=3

	आगरा,अवध 31.2 **राष्ट्रीय आंदोलन के केंद्र (कोई तीन):** चंपारण,खेड़ा,अहमदाबाद,बनारस,अमृतसर,चौरी चौरा,लाहौर,बारदोली,दांडी,बंबई,कराची		1x3=3

61/2/1, 61/2/2, 61/2/3

प्रश्न सं. 31.1 और 31.2 के लिए

For question no. 31.1 and 31.2